खेती-बारी

कृषि विज्ञान केन्द्र गुमला

विकास भारती बिशुनपुर

भाकृअनुप–कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान जोन–IV, पटना

ISO 9001:2015:UCSPL09802500483

जनवरी से दिसम्बर 2024 | अंक -18 (वार्षिक संस्करण) | ईमेल : kvk.gumla@gmail.com

पद्मश्री
डॉ. अशोक भगत
सचिव विकास भारती

इस वास्तविकता को नकारा नहीं जा सकता है कि कृषि क्षेत्र में जल की सर्वाधिक मांग है। कृषि में जल की कमी का सीधा–सीधा प्रभाव देश की खाद्य सुरक्षा से जुड़ा हुआ है। यही नहीं देश के बहुसंख्यक कृषकों एवं कृषक श्रमिकों की आय पर भी इसका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। झारखंड जैसे प्रदेश की आजीविका पूरी तरह से कृषि पर निर्भर है, लेकिन कृषि में उपयुक्त भूमि का बड़ा हिस्सा आज भी सिंचाई सुविधाओं से वंचित है और जलापूर्ति के लिए मानसून ही एकमात्र आसरा है। हालांकि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों में जल को कम से कम प्रयोग करने से संबंधित तकनीकों तथा फसल किस्मों का विकास किया गया है, जिसे कृषि विज्ञान केन्द्रों के द्वारा बड़े पैमाने पर किसानों तक उपलब्ध एवं बढ़ावा भी दिया जा रहा है। कृषि विज्ञान केन्द्र गुमला 2011–12 से इस दिशा में निरंतर प्रयास कर रहा है। केन्द्र के द्वारा विकसित मॉडल **''बोरा–बाँध''** एक प्रभावी एवं सफल प्रयास साबित हुआ है। इसकी हम सराहना करते हैं। जल बर्बादी को हर कीमत पर रोकने एवं जल संचयन के छोटे–छोटे आयामों पर प्रयास करने की जरुरत है। इस बारे में अब और लापरवाही हमारी भावी पीढ़ी के लिए अत्यन्त जोखिम भरी हो सकती है।

डॉ. अंजनी कुमार
निदेशक
अटारी, पटना, जोन IV

मॉडल पलसेस विलेज स्कीम यानी मॉडल दाल ग्राम योजना यह एक ऐसी योजना है जो गांवो को दालों के उत्पादन और खपत में सुधार करने के लिए प्रोत्साहित करती है। इस योजना की शुरुआत वर्ष 2024 के खरीफ मौसम से कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा शुरु की गई। आदर्श दलहन गाँव योजना अन्तर्गत चिन्हित गांवों में अरहर, मसूर एवं उरद की खेती को आधुनिक कृषि तकनीकी के द्वारा बढ़ावा दिया जाएगा। तीनों दलहनी फसलो को फसल विविधिकरण अन्तर्गत बढ़ावा देकर आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए सरकार न्यूनतम समर्थन मूल्य (एम.एस.पी.) पर तुअर, उरद एवं मसूर की खरीदगी सुनिश्चित करेगी। इस योजना से जुड़े सभी किसानों की ई–समृद्धि पोर्टल पर पंजीकृत किया जाएगा। हमें खुशी है कि कृषि विज्ञान केन्द्र गुमला, विकास भारती बिशुनपुर के द्वारा भी आर्दश दलहन ग्राम योजना को क्रियान्वयन किया जा रहा है जिसके अन्तर्गत 300 हे0 क्षेत्रफल में अरहर, मसूर एवं उरद को बढ़ावा मिलेगा। जिससे न सिर्फ किसान लाभन्वित होंगें वरन् देश दलहन उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ेगा।

डॉ. संजय कुमार
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

कृषि विज्ञान केन्द्र, गुमला ने विगत वर्ष के दौरान किए गए अपने प्रमुख कार्यों को जन–सामान्य एवं हितधारकों तक पहुँचाने हेतु एक अभिनव प्रयास किया है। इस प्रयास के तहत केन्द्र द्वारा प्रकाशित **'खेती–बारी'** नामक पत्रिका के माध्यम से जिले में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में हुई प्रगति को सरल, प्रभावशाली एवं सूचनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह पत्रिका जिले में फसल उत्पादन, पशुधन प्रबंधन, नवीनतम कृषि तकनीकों तथा प्रत्यक्षण गतिविधियों की जानकारी देने के साथ–साथ किसानों को नवाचारों से जोड़ने का कार्य कर रही है। इसके अतिरिक्त, केन्द्र द्वारा उद्यमिता विकास एवं कौशल उन्नयन को भी प्राथमिकता दी जा रही है, जिससे युवाओं को आत्मनिर्भर बनने की दिशा में मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गुमला समन्वित कृषि विकास की अवधारणा को केंद्र में रखते हुए, बहु–आयामी दृष्टिकोण अपनाकर किसानों की आय वृद्धि एवं आजीविका सुदृढ़ीकरण की दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है। यह पहल न केवल तकनीकी जागरूकता बढ़ाने में सहायक है, बल्कि जिले में सतत कृषि विकास को भी एक नई दिशा प्रदान कर रही है। यह प्रयास निश्चित रूप से कृषि क्षेत्र में नवाचार, सहभागिता और पारदर्शिता को प्रोत्साहित करता है, और भविष्य में भी इसी प्रतिबद्धता के साथ केन्द्र द्वारा ग्रामीण विकास के पथ पर कार्य जारी रहेगा।

कृषि विज्ञान केन्द्र - एक परिचय

कृषि विज्ञान केन्द्र भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् का एक इनोवेटिव संस्थान है, जो संबंधित जिले के पारिस्थितिकी एवं भूमि उपयोग पद्धति के अनुकूल क्षेत्र विशेष के कृषि से संबंधित समस्याओं के निदान एवं रोजगार सृजन, सहभागिता आधारित कृषि तकनीकी आकलन, प्रत्यक्षण एवं प्रशिक्षण कार्य का संपादन खेत परीक्षण, अग्र पंक्ति प्रत्यक्षण, ग्रामीण युवा-युवतियों के कौशल विकास के साथ कृषि से जुड़े प्रसार कार्यकर्ताओं को नवीनतम कृषि तकनीकी की जानकारी से अवगत कराता है। किसानोपयोगी कृषि से संबंधित जानकारी एवं सूचना के साथ-साथ सहभागिता आधारित बीजोत्पादन का संचालन एवं संपादन भी करता है।

जिसका उद्देश्य क्षेत्र विशेष में कृषि तकनीकी के माध्यम से उत्पादन एवं उत्पादकता में बढ़ोत्तरी के साथ-साथ कृषि में उत्पादन लागत को कम करते हुए अधिक आय सृजन कराना है जो कि टिकाउ, स्वीकार्य, सस्ती एवं सुलभ हो। उपलब्ध उन्नत तकनीकी को खेत तक पहुँचाना केन्द्र का लक्ष्य होता है जिसे केन्द्र प्रगतिशील किसान, कृषि मित्रों, स्वयं सहायता समूहों, किसान उत्पादक संगठन, जनसेवकों, कृषि विभाग, आत्मा, प्रिन्ट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से संपन्न कराता है। इन सभी के पीछे मुख्य उद्देश्य, उत्पादन एवं उत्पादकता के साथ-साथ आय सृजन कर टिकाऊ खेती को बढ़ावा देना है, ताकि ग्रामीणों के जीवन स्तर में सुधार लाया जा सके। अभी तक पूरे भारतवर्ष में कुल 731 जिलों में कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापना की जा चुकी है। कृषि विज्ञान केन्द्र, गुमला को 2004 में विकास भारती बिशुनपुर के शासकीय नियंत्रण में संचालन हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई है। केन्द्र का मुख्यालय गुमला जिला मुख्यालय से 50 किमी दूर नेतरहाट पहाड़ी के नीचे बिशुनपुर घाटी में प्रखण्ड मुख्यालय बिशुनपुर (गुमला) में अवस्थित है। केन्द्र को ICAR-ATARI, Patna, Zone-IV के द्वारा वित्तीय एवं तकनीकी सहयोग के साथ नियमित भौतिक एवं वित्तीय मूल्यांकन किया जाता है।

केन्द्र द्वारा संपादित मुख्य गतिविधियाँ :-

खेत परीक्षण :- क्षेत्र विशेष के मुख्य समस्याओं के समाधान हेतु खेत परीक्षण के अन्तर्गत विभिन्न कृषि तकनीकों का आकलन किसानों के खेत पर ही किया जाता है। प्रदर्शित तकनीकों में से प्रभावी तकनीकी को पुनः अग्र पंक्ति प्रदर्शनों के माध्यम से अन्य किसानों तक पहुँचाया जाता है। खेत परीक्षणों का मुख्य उद्देश्य उन तकनीकों को किसानों तक पहुँचाना है जो कि क्षेत्र विशेष के किसानों के कृषि से संबंधित तकनीकी समस्या का निदान करने में सटीक एवं लाभकारी हो।

केन्द्र के द्वारा वर्ष 2024 में समस्या समाधान हेतु विभिन्न विषयों पर खेत परीक्षण संपन्न कराया गया। जिसके अनुसार संस्तुति निम्नलिखित है।

आम में बायोमास मल्चिंग का मूल्यांकन – टेफ्रोसिया पौधे का 1 किलोग्राम सूखा बायोमास प्रति स्क्वायर मीटर के हिसाब से पौधे की छत्रक के नीचे पलवार (मल्चिंग) करने से आम की उपज में 40-50 प्रतिशत की वृद्धि होती है। अतः अधिक उपज, आय और बेहतर मिट्टी की उर्वरता के लिए इसके उपयोग की अनुशंसा की जाती है।

आम के बाग में अंतर फसल की खेती – आम की बाग में अदरक की अंतरवर्ती खेती करने से कुल उत्पादकता (आम के बराबर उपज) अधिक प्राप्त होती है। अतः अधिकतम उपज एवं आय लिए आम के बाग में अदरक की अंतरवर्ती खेती करने की अनुशंसा की जाती है।

खरीफ मौसम के लिए प्याज की किस्म का मूल्यांकन – खरीफ मौसम में प्याज की खेती के लिये अर्का कल्याण किस्म की संस्तुति की जाती है।

फूलगोभी में जैविक खेती पैकेज का मूल्यांकन - 50 क्विंटल फार्म यार्ड मैन्योर (गोबर खाद)/हेक्टेयर -उर्वरक संस्तुति (N:P: K 200:150:100)/हेक्टेयर के 25% नाइट्रोजन की आपूर्ति जैविक स्रोत से {50 किग्रा नाइट्रोजन की आपूर्ति जैविक स्रोतों (625 किग्रा करंज खली और 2500 किग्रा वर्मीकम्पोस्ट)} के माध्यम से करने पर उपज में 15-20 प्रतिशत की वृद्धि प्राप्त होती है। अतः अधिकतम उपज एवं आय और बेहतर मिट्टी की उर्वरता के लिए इसकी सिफारिश की जाती है।

धान की खेती में नाइट्रोजन उपयोग दक्षता में सुधार - उर्वरक संस्तुति (N:P: K 100:40:20)/हेक्टेयर के आधार पर 50% नाइट्रोजन की आपूर्ति एवं 100% फास्फोरस एवं 100% पोटाश की आपूर्ति नैनो यूरिया के 2 छिड़काव (25 से 30 दिन) एवं (60 से 65 दिन) रोपाई के बाद /4 मिलीलीटर पानी के साथ करने से उपज में 12-15 प्रतिशत की वृद्धि प्राप्त होती है। अतः अधिकतम उपज एवं आय के लिए इसकी संस्तुति की जाती है।

आम में लाल पट्टीदार कैटरपिलर (Red Banded Caterpillar) के लिए प्रबंधन विधियों का मूल्यांकन - 25-30 दिनों के अंतराल पर थियाक्लोप्रिड 21.7 एस सी का 0.04% (@ 2 मिली/लीटर) के दो छिड़काव करने से कीट नियंत्रित होता है जिससे उत्पादकता में वृद्धि होती है। अतः लाल पट्टीदार कैटरपिलर के प्रबंधन सहित अधिकतम उपज एवं आय के लिए इसकी अनुशंसा की जाती है।

मध्यम भूमि में टमाटर की उत्पादकता पर विभिन्न सिंचाई विधियों का आकलन - मध्यम भूमि में टमाटर की उत्पादकता बढ़ाने के लिये प्लास्टिक मल्चिंग के साथ ड्रिप सिंचाई की अनुशंसा की जाती है।

नाइजर में मैनुअल कम लागत वाले निराई उपकरणों का मूल्यांकन - नाइजर (सरगूजा) में मानव चालित कम लागत वाले निराई रोटेटरी टिलर की अनुशंसा की जाती है

बकरियों में वजन बढ़ाने के लिए सैकरमाइसीज और लैक्टोबैसिलस आधारित प्रोबायोटिक्स का मूल्यांकन - बकरियों के वजन में वृद्धि के लिये 5 ग्राम प्रतिदिन प्रोबायोटिक्स और 3 महीने के अंतराल पर कृमिनाशक (ऑक्सीक्लोज़ानाइड 10 मिलीग्राम/किलोग्राम शरीर के वजन और फेनबेंडाज़ोल 7.5 मिलीग्राम/किलोग्राम शरीर के वजन) के उपयोग की अनुशंसा की जाती है।

डेयरी पशुओं में दोबारा प्रजनन पर हर्बल मिश्रण का प्रभाव –डेयरी पशुओं को कृमिनाशक एवं खनिज मिश्रण + करी पत्ता (50 ग्राम), हल्दी पाउडर 95 ग्राम), मूली (1), सहजन (मुनगा) का पत्ता (100 ग्राम), एलोवेरा पल्प (100 ग्राम), सिसस तना (100 ग्राम), (गुड़ 9100 ग्राम) और नमक (25 ग्राम) का हर्बल मिश्रण तैयार कर देने से डेयरी पशु दोबारा प्रजनन के लिए जल्दी तैयार होते हैं।

अग्र पंक्ति प्रदर्शन :– अग्र पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत कृषि की नवीन तकनीकियों का प्रदर्शन किसानों के खेत पर किया जाता है जिससे अन्य किसान देख एवं सीख कर लाभान्वित हो सकें। अग्र पंक्ति प्रदर्शन का मुख्य उद्देश्य प्रदर्शित आधुनिक कृषि की नवीनतम तकनीकी से संबंधित उत्पादन आँकडों के साथ-साथ किसान प्रतिक्रिया की जानकारी प्राप्त करना होता है जिससे उन्नत एवं प्रभावी तकनीकी को अधिक से अधिक किसान उपयोग कर सकें।

अग्र पंक्ति प्रदर्शन का उद्देश्य किसानों के खेतों पर वैज्ञानिक एवं उन्नत कृषि तकनीकों का प्रत्यक्ष प्रदर्शन करके उन्हें नई विधियों से अवगत कराना है, जिससे वे इन तकनीकों को अपनाकर अपनी फसल की उत्पादकता, गुणवत्ता और आय में वृद्धि कर सकें। इसका उद्देश्य अनुसंधान एवं किसान के बीच की तकनीकी खाई को पाटना, किसानों में नई तकनीकों के प्रति विश्वास उत्पन्न करना, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण को बढ़ावा देना तथा कृषि की लागत को कम कर अधिक लाभ अर्जित करना है। केन्द्र के द्वारा आधुनिक तकनीकी पर निम्न फसलों पर अग्र पंक्ति प्रदर्शन का आयोजन किया गया।

फसल	प्रभेद	क्षेत्रफल (हे०)	सहभागी किसानों की संख्या
अग्र पंक्ति प्रदर्शन			
धान	सी०आर० धान-320, स्वर्ण श्रेया	4.9	15
मडुआ	जी०पी०यू०-28	16	82
गेंहूँ	डी०बी०डब्ल्यू०-187	5.6	15
क्लस्टर अग्र पंक्ति प्रदर्शन (तेलहन खरीफ एवं रबी 2024)			
सरसों	BBM-1	200	376
तिसी	प्रियम, दिव्या	40	114
सूर्यमुखी	KBSH-78	20	105
मूँगफली	K-1812, K-6	45	158
सरगुजा	बिरसा नाइजर-1 व 3	82	153
तिल	GJT-6	40	91
मॉडल तेलहन ग्राम रबी 2024			
सरसों	BBM-1	200	372
क्लस्टर अग्र पंक्ति प्रदर्शन (दलहन खरीफ एवं रबी 2024)			
अरहर	राजीव लोचन, IPA-203	50	167
मसूर	IPL-220	20	109
ICAR-IIPR के अन्तर्गत दलहन प्रदर्शन			
मसूर	IPL-220	10	24
उद्यान फसल प्रदर्शन			
टमाटर	स्वर्ण अनमोल	1.0	07
बैंगन	स्वर्ण श्यामली	0.09	13
मिर्च	स्वर्ण अपूर्वा	0.06	13
आलू	कुफरी चिपसोना	32	80
पपीता	राँची पपीता	0.2	20
गेंदा	पूसा नारंगी	0.4	03

फसल	प्रभेद	क्षेत्रफल (हे०)	सहभागी किसानों की संख्या
हाईब्रिड फसल प्रदर्शन			
धान	डी०आर०एच०-2	300	430
मक्का	डी०के०सी०-9149	5.0	24
पशुपालन के अन्तर्गत प्रदर्शन			
चारा फसल		03	55
बैकयार्ड पॉल्ट्री		03 unit	03
बत्तख पालन		10 unit	10
अन्य प्रदर्शन			
मधुमक्खी पालन		04	04
लाह		10.8	27
महिला सशक्तिकरण			
मशरुम उत्पादन	ओयस्टर	25 unit	25
पोषण सुरक्षा		40 unit	40
फार्म मशीनरी			
सूक्ष्म सिंचाई		0.2	01
एग्री ड्रोन		53.4	102
डी० आर० एम० आर० के अन्तर्गत प्रदर्शन (खरीफ 2024)			
सरसों	BBM-1	40	100
प्राकृतिक खेती के अन्तर्गत प्रदर्शन		**4.8**	**12**
AICRP के अन्तर्गत प्रदर्शन			
सरगुजा	बिरसा नाइजर-3	20	50

प्रखंड - बिशुनपुर, घाघरा, गुमला, सिसई, भरनो, बसिया, जारी, चैनपुर, डुमरी, कामडारा, रायडीह, पालकोट

गाँव - हलमाटी, नवाटोली, नवाडीह, शिवराजपुर, नवाटोली, कुबाटोली, चुंदरी, नावाडीह, लालमाटी, बेलागढ़ा, शिवराजपुर, नवाटोली, सरनाटोली, गुनिया, जरगाटोली, हापामुनी, कुराग, हलमाटी, डुको, सिकवार, मायेल, कुगाव, कुराग, ईचा, सेहल बंसीटोली, चपका, टोटांबी, ईटकिरी, खटंगा, लहसडांड, पोड़ी, शिवराजपुर, सेहल बंसीटोली, लावादाग, शिवसेरेंग, सरनाटोली, नवाटोली, लबगा, लोंगा, करमटोली, अमतीपानी, हेलता, सेरका, अरंगलोया, समद्री, लंगड़ाटांड, रांगे, मंजीरा, बाहर सेरका, तुमसे, सेरका, चापाटोली, बेती, हेल्ता, चिपरी, बेंदी, अरंगलोया, ओरेया, सेमरा, कुदरा, शिवनाथपुर, गुड़गांव, जमगाई, भुटवीटोली, बिश्रामपुर, चटकपुर, नगर, कटाईदामर, लालमाटी, भंडारटोली, गोखुलपुर, ओलमुंडा, कसीरा, कुलबीरा, लुटो बरटोली, पनसो, भभारी, कुलबीरा, खोरा जामपानी, कोनाटोली, बरटोली, गुमला, धनगांव, नवाटोली, कोटाम, कसीरा, पहाड़पनारी, पतिया, कसीरा, सांवरिया, कोटाम, कुल्ही, मसगांव, हरगड़ा, बांसडीह, मसगांव, तिलहाईटोली, रतनटोली, उमड़ा, बघिमा, तेपसाटोली, गंजोटोली, तुरिअंबा, कुम्हरो, भरनो, अंबोआ, समसेरा, जामटोली, दत्तरा, कुम्हारी, तुरबुल, अरहरा, गढ़ा, सुरहू **(कुल गांवों की संख्या-127)**

प्रशिक्षण - कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा क्षेत्र विशेष के किसानों की आवश्यकताओं एवं जरुरतों का ध्यान में रखते हुए समय-समय पर आवासीय/गैर आवासीय विभिन्न प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाता है। साथ ही साथ ग्रामीण युवक एवं युवतियों हेतु स्वरोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण एवं प्रसार कार्यकर्ताओं के ज्ञानवर्द्धन हेतु विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाता है। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य कृषि की नवीनतम जानकारियों से कृषकों, एवं प्रसार कार्यकर्ताओं का ज्ञानवर्द्धन करना तथा कौशल विकास के माध्यम से ग्रामीण युवक युवतियों को रोजगारोन्मुखी बनाना है।

जनवरी से दिसम्बर 2024 तक ग्रामीण युवक एवं युवतियों हेतु निम्न विषयों पर स्वरोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

प्रशिक्षण का विषय	प्रशिक्षणों की संख्या	प्रशिक्षणार्थियों की संख्या
पौध प्रवर्धन तकनीकी	01	25
सब्जी नर्सरी प्रबंधन	01	17
केंचुआ खाद उत्पादन एवं मार्केटिंग	02	45
खाद संर्वधन	01	25
मृदा नमूना लेने की विधि एवं मृदा जाँच	01	25
लाह उत्पादन	01	26
मूल्य संवर्धन	01	15
मशरुम उत्पादन	04	90

प्रशिक्षण का विषय	प्रशिक्षणों की संख्या	प्रशिक्षणार्थियों की संख्या
पम्पसेट की मरम्मती एवं रख-रखाव	01	25
सूक्षम सिंचाई प्रणाली लगाने की विधि एवं प्रबंधन	02	38
बकरी पालन	02	40
सूकर पालन	02	45
पारा भेट	01	16
समेकित कृषि प्रबंधन	02	79
सिलाई एवं कटाई	01	19

केन्द्र के द्वारा एवं प्रायोजित प्रशिक्षण विवरणी

प्रशिक्षण के प्रकार	कार्यरत किसान हेतु	ग्रामीण युवा-युवतियों हेतु	प्रसार कार्यकर्त्ता हेतु
प्रशिक्षण की संख्या	127	32	04
प्रशिक्षुओं की संख्या	3607	610	108

केन्द्र के द्वारा आयोजित मुख्य प्रसार गतिविधियाँ

गतिविधि	कार्यक्रमों की संख्या	प्रतिभागियों की संख्या
प्रक्षेत्र दिवस	29	591
किसान मेला	03	6964
फिल्म शो	14	442
विधि प्रदर्शन	04	54
किसान गोष्ठी	15	1056
वैज्ञानिकों द्वारा किसान खेत भ्रमण	169	606
किसान भ्रमण (के०वी०के०)	109	1465
सलाह सेवा	48	411

गतिविधि	संख्या	किसानों की संख्या
मृदा स्वास्थ्य शिविर	05	314
पशु स्वास्थ्य शिविर	26	181
स्वयं सहायता समूह बैठक	09	162
स्वच्छता ही सेवा	02	1980
कृषक जागरुकता कार्यक्रम	02	55
समूह बैठक	07	121
पूर्व प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन	03	82
मा० प्रधानमंत्री के कार्यक्रम का सीधा कार्यक्रम	05	583

गतिविधि	कार्यक्रमों की संख्या	प्रतिभागियों की संख्या
चिकित्सा सेवा	169	170
कार्यशाला	03	123
बाह्य भ्रमण	17	704
प्राकृतिक खेती जागरुकता कार्यक्रम	22	1135
ग्रामीण विद्यालयों में कृषि शिक्षा	03	152
एफ०पी०ओ० बैठक	15	292
सर्वे CSISA	40	400
रेडियो कार्यक्रम	01	
एफ०पी०ओ० कार्यशाला	01	33
पी०एम० कुसुम के अन्तर्गत कार्यशाला	02	82
एस०सी०एस०पी० अन्तर्गत इनपुट वितरण	01	57
कृषि प्रदर्शनी	01	130
प्रसार पत्रिका का प्रकाशन	06	
अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च)	01	50
स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त)	01	94
महिला किसान दिवस (15 अक्टूबर)	01	87
किसान दिवस (23 दिसम्बर)	01	46
राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (28 फरवरी)	01	58
तकनीकी सप्ताह	01	493
विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून)	04	43
हिंदी पखवाड़ा (1-14 सितम्बर)	01	610
विश्व मधु दिवस (20 अगस्त)	01	35

गतिविधि	संख्या	किसानों की संख्या
टी० एस० पी० अन्तर्गत इनपुट वितरण	16	618
ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव	01	01
ड्रोन जागरुकता	04	93
किसान वैज्ञानिक संवाद	01	36
सेमिनार	01	150
स्वच्छता कार्यक्रम	09	252
समाचार पत्रों में स्थान	53	
टी०वी० कार्यक्रम	01	
मान्नीय राष्ट्रपति के कार्यक्रम का सीधा प्रसारण	01	62
(राष्ट्रीय द्वितीय कृषि संस्थान नामकुम, राँची) कृषि चौपाल का सीधा प्रसारण	01	125
अन्य किसान मेला में सहभागिता	03	581
व्याख्यायन	06	162
गणतंत्र दिवस	01	200
गणतंत्र दिवस झांकी	01	7000
विश्व योग दिवस (21 जून)	01	59
गाजर घास जागरुकता सप्ताह (16-22 अगस्त)	01	192
विश्व मृदा दिवस (5 दिसम्बर)	01	57
विकसित भारत संकल्प यात्रा	44	19337
राष्ट्रीय मधुमक्खी दिवस (20 मई)	01	29
भा०कृ०अनु०प० स्थापना दिवस (16 जुलाई)	01	100
पोषण माह (1-30 सितम्बर)	01	639

कुल प्रसार कार्यक्रमों की संख्या - 742, कुल प्रतिभागियों की संख्या - 20589

विशेष आयोजन एवं गतिविधियाँ

किसान मेला - केन्द्र के द्वारा विकास भारती के स्थापना दिवस के अवसर पर दिनांक 14 जनवरी 2024 को बिशुनपुर प्रखंड के सातो गाँव में किसान मेला का आयोजन किया गया जिसमें कुल 376 किसानों ने भाग लिया। मेला में बतौर विशिष्ट अतिथि के रुप में सम्मिलित होकर संस्था के सचिव पद्मश्री डा० अशोक भगत ने किसानों का उत्साहवर्द्धन किया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य गाँव के किसानों को एक जगह पर इकठ्ठा करके उनके बीच तकनीकी का आदान प्रदान कराना तथा कृषि की उन्नत तकनीकी का गाँव में कितना विस्तार हुआ इसका आकलन मेला में लगाए गए उत्पादों की प्रदर्शनी का अवलोकन कर करना है।

गणतंत्र दिवस - दिनांक 26 जनवरी 2024 को गणतंत्र दिवस के अवसर पर केन्द्र मुख्यालय में झण्डोतोलन किया गया। इस अवसर पर बिशुनपुर प्रखण्ड विकास पदाधिकारी सहित बिशुनपुर प्रखण्ड के अन्य पदाधिकारीगण मौजूद थे। साथ ही इस अवसर पर केन्द्र के द्वारा जिला मुख्यालय के परमवीर अलबर्ट एक्का स्टेडियम में कृषि झांकी का प्रदर्शन किया गया। जिसके द्वारा उपस्थित जनों के बीच किसान ड्रोन एवं प्राकृतिक खेती के बारे में जानकारी दी गई।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस - दिनांक 28 फरवरी 2024 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर केन्द्र के द्वारा जतरा टाना भगत विद्या मंदिर, बिशुनपुर विद्यालय में 58 विद्यार्थियों के बीच विज्ञान के प्रति जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस – दिनांक 8 मार्च 2024 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर केन्द्र मुख्यालय में महिला गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कुल 50 महिलाएं उपस्थित थी। कार्यक्रम में उपस्थित महिलाओं को महिलाओं के अधिकार, न्याय एवं समानता के अधिकारों के बारे में जानकारी दी गई एवं महिलाओं को कृषि क्षेत्र में भागीदारी नवीनतम कृषि तकनीक एवं कृषि नवाचारों को अपनाने पर सलाह दी गई।

राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन के अन्तर्गत कार्यक्रम – राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन कार्यक्रम के अन्तर्गत कृषि विज्ञान केन्द्र गुमला के द्वारा दिनांक 15 से 21 मार्च 2024 एवं 17 से 23 मार्च 2024 तक सात दिवसीय मधुमक्खी पालन हेतु दो प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिसमें कुल 50 किसानों को प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण के दौरान किसानों को बाह्य भ्रमण हेतु किसान प्रक्षेत्र बेडों एवं पूर्वी क्षेत्र के लिए भा०कृ०अनु०परि० का अनुसंधान परिसर, प्लाण्डु राँची का परिभ्रमण कराया गया। इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत दिनांक **29–30 मार्च 2024** को दो दिवसीय जिला स्तरीय सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमें 154 किसानों ने भाग लिया।

एग्रोटक जिला स्तरीय किसान मेला सह प्रदर्शनी का आयोजन – दिनांक **12 मार्च 2024** को ''किसान समृद्धि के लिए प्राकृतिक खेती एवं तेलहन उत्पादन आज की जरुरत'' विषयक पर एक दिवसीय एग्रोटक जिला स्तरीय किसान मेला का आयोजन केन्द्र मुख्यालय बिशुनपुर (कृषि तकनीकी प्रदर्शन परिसर –सृजन) में किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य किसानों, उद्यमी महिलाओं/किसानों महिला मंडलों, किसान उत्पादक समूहों एवं कृषि प्रसार कार्यकर्ताओं के बीच प्राकृतिक खेती के महत्व एवं तेलहन अनाज उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन के बारे में जागरुकता पैदा करना था। किसान मेला का उद्घाटन **श्री समीर उराँव, माननीय सांसद, राज्यसभा, भारत सरकार** के द्वारा किया गया। मेला में जिले के विभिन्न प्रखण्डों से आए कुल 819 किसान भाई बहनों ने भाग लिया एवं कृषि प्रदर्शनी का प्रदर्शन किया।

मशरुम उत्पादकों हेतु पूर्व शिक्षण मान्यता प्रशिक्षण (RPL) कार्यक्रम – दिनांक **27 से 29 मार्च 2024** तक NSDC, ASCI द्वारा प्रायोजित मशरुम उत्पादकों हेतु पूर्व शिक्षण मान्यता हेतु तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण में कुल 40 मशरुम उत्पादकों को प्रशिक्षण उपरांत ASCI द्वारा मूल्यांकन कर प्रमाण पत्र दिया जाएगा।

प्राकृतिक खेती जागरुकता कार्यक्रम – जनवरी से दिसम्बर 2024 तक जिले के विभिन्न प्रखंडों में प्राकृतिक खेती परियोजना के अंतर्गत किसानों को प्राकृतिक खेती के प्रति जागरूक करने हेतु कुल 22 जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिनके माध्यम से कुल 1135 किसानों को प्राकृतिक खेती की अवधारणा, लाभ तथा इसके प्रमुख घटकों जैसे जीवामृत, बीजामृत, घनजीवामृत, नीमास्त्र एवं अग्नेयास्त्र के निर्माण व उपयोग की विधियों की जानकारी प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त परियोजना के अंतर्गत कुल 10 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया, जिनके माध्यम से 400 किसानों को प्राकृतिक खेती की वैज्ञानिक तकनीकों एवं व्यावहारिक तरीकों से अवगत कराया गया।

मान्नीय प्रधानमंत्री के अभिभाषण का सीधा प्रसारण – दिनांक 18.06.24, 11.08.24 एवं 05.10.24 को किसान सम्मान निधि के 17वें एवं 18वें किस्त के स्थानांतरण के अवसर एवं आईसीएआर के द्वारा 109 जलवायु अनूकूल किस्मों के विमोचन के अवसर पर मान्नीय प्रधानमंत्री के अभिभाषण का सीधा प्रसारण का आयोजन केन्द्र मुख्यालय में किया गया। उक्त कार्यक्रमों में जिले के विभिन्न प्रखंडों से कुल 402 किसानों ने भाग लिया।

ग्रामीण विद्यालयों में कृषि शिक्षा – कृषि विज्ञान केन्द्र, गुमला द्वारा बिशुनपुर प्रखण्ड के 3 विद्यालयों, कोयलेश्वरनाथ विद्या मंदिर, राजकीयकृत मध्य विद्यालय बिशुनपुर, जतरा टाना भगत विद्या मंदिर बिशुनपुर एवं कस्तुरबा गांधी आवासीय विद्यालय बिशुनपुर में सेमिनार आयोजित कर कुल 152 स्कूली विद्यार्थियों को कृषि शिक्षा से संबंधित जानकारी प्रदान की गई। इन सेमिनारों में विद्यार्थियों को व्यवहारिक ज्ञान के माध्यम से आधुनिक कृषि तकनीकों, जैविक खेती एवं कृषि आधारित नवाचारों की जानकारी दी गई, जिससे उनमें कृषि के प्रति रुचि व जागरूकता विकसित हो सके।

कृषकों हेतु बाह्य भ्रमण कार्यक्रमों का आयोजन – जनवरी से दिसम्बर 2024 तक कृषि विज्ञान केन्द्र, गुमला द्वारा कुल 17 बाह्य भ्रमण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिनके माध्यम से 704 कृषक भाइयों एवं बहनों को ''देखो और सीखो'' पद्धति द्वारा कृषि की नवीनतम तकनीकों की प्रत्यक्ष जानकारी दी गई। इन कार्यक्रमों के अंतर्गत कृषकों को कृषि विज्ञान केन्द्र गुमला के कृषि तकनीकी फार्म, पूर्वी क्षेत्र के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का अनुसंधान परिसर प्लाण्डु (राँची) एवं बिरसा कृषि विश्वविद्यालय राँची का भ्रमण कराया गया। इन भ्रमणों का उद्देश्य किसानों को आधुनिक कृषि, बागवानी एवं अनुसंधान आधारित तकनीकों से अवगत कराकर उनकी जानकारी एवं उत्पादकता में वृद्धि करना था।

विद्यालय मृदा स्वास्थ्य कार्यक्रम – दिनांक .09.05.2024 से 10.05.2024 तक एकलव्य आवासीय विद्यालय बसिया एवं घाघरा में ''**विद्यालय मृदा स्वास्थ्य कार्यक्रम 2024-25**'' के अंतर्गत एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 194 विद्यार्थियों को मृदा नमूना संग्रहण, मृदा परीक्षण तथा मृदा स्वास्थ्य कार्ड निर्माण की विधियों की व्यवहारिक जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम का उद्देश्य स्कूली विद्यार्थियों को मृदा स्वास्थ्य, पोषक तत्व प्रबंधन तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति जागरूक करना था, जिससे वे कृषि के वैज्ञानिक पहलुओं को समझ सकें और सतत कृषि विकास में योगदान दे सकें।

विश्व मधुमक्खी दिवस – **20 मई 2024** को ''**विश्व मधुमक्खी दिवस-2024**'' के अवसर पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य मधुमक्खी पालन के महत्व, परागण में इसकी भूमिका एवं इसके माध्यम से किसानों की आय वृद्धि की संभावनाओं को उजागर करना था। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं मधु मिशन (NBHM) के अंतर्गत आयोजित किया गया, जिसमें 35 प्रतिभागियों को मधुमक्खी पालन की वैज्ञानिक विधियाँ, रख-रखाव तथा इससे संबंधित लाभों की जानकारी दी गई।

विश्व पर्यावरण दिवस – विश्व पर्यावरण दिवस 2024 के अवसर पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें पर्यावरण संरक्षण, सतत् कृषि, जल प्रबंधन और जैविक खेती जैसे विषयों पर चर्चा की गई। कार्यक्रम में वरीय वैज्ञानिक एवं प्रमुख, विभिन्न वैज्ञानिकों, अधिकारियों तथा किसानों ने भाग लिया। इस अवसर पर चल रहे 15 दिवसीय सर्टिफिकेट कोर्स के प्रतिभागियों ने भी सहभागिता की। वक्ताओं ने पर्यावरण को संरक्षित रखने की आवश्यकता पर बल देते हुए सामूहिक प्रयासों की सराहना की। कार्यक्रम में वृक्षारोपण के महत्व पर उपस्थित लागों को जागरूक किया गया, जिससे उपस्थित जनसमूह में पर्यावरण के प्रति सकारात्मक सोच विकसित हो सके। इस अवसर पर कुल 43 प्रशिक्षणार्थी एवं किसान उपस्थित थे।

समेकित पोषक तत्व प्रबंधन विषयक प्रशिक्षण का आयोजन – दिनांक **5 से 21 जून 2024** एवं **2 से 16 सितम्बर 2024** तक ''समेकित पोषक तत्व प्रबंधन (INM)'' विषय पर 15 दिवसीय सर्टिफिकेट कोर्स का आयोजन किया गया, जिसमें गुमला जिले के 11 प्रखंडों से 79 युवक एवं युवतियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण का उद्देश्य किसानों को फसलों में आवश्यक उर्वरकों की सही मात्रा एवं उपयोग की जानकारी प्रदान करना है, जिससे उत्पादन, उत्पादकता और मृदा स्वास्थ्य में सुधार हो सके। यह कार्यक्रम उर्वरक के संतुलित उपयोग, लागत में कमी तथा उर्वरक की बचत को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ युवाओं को स्वरोजगार हेतु प्रेरित करना है। कोर्स पूर्ण करने के पश्चात प्रतिभागी जिला कृषि विभाग से लाइसेंस प्राप्त कर उर्वरकों की बिक्री भी कर सकेंगे।

प्रखंड स्तरीय बीज वितरण सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन – रागी मिशन 2024-25 के अंतर्गत आत्मा गुमला एवं कृषि विज्ञान केंद्र, गुमला (विकास भारती, बिशुनपुर) द्वारा संयुक्त तत्वाधान में 03-09 जुलाई 2024 तक जिले के 12 प्रखंडों में प्रखंड स्तरीय बीज वितरण सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 626 किसानों (महिला एवं पुरुष) ने भाग लिया। किसानों को रागी फसल की वैज्ञानिक खेती, उन्नत बीज, मृदा स्वास्थ्य, जैविक विधियाँ, कीट-रोग प्रबंधन एवं जलवायु अनुकूल खेती के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम के उपरांत किसानों के बीच आत्मा गुमला के द्वारा रागी बीज का वितरण भी किया गया, ताकि वे सीख को व्यवहार में लाकर उत्पादन को बढ़ा सकें।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन – अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस **22 जून 2024** के अवसर पर योग सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें केंद्र के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों में योग के प्रति जागरूकता फैलाना और दैनिक जीवन में इसके महत्व को समझाना था। कार्यक्रम के दौरान सभी ने सामूहिक रूप से योगाभ्यास कर योगा फॉर वेलनेस के संदेश को आत्मसात किया। इस अवसर पर कुल 59 लोगों ने सामूहिक योगयभ्यास किया।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) का 96वां स्थापना दिवस – दिनांक **16 जुलाई 2024** को जतरा टाना भगत विद्या मंदिर बनारी बिशुनपुर में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को आईसीएआर की उपलब्धियों, कृषि में वैज्ञानिक नवाचारों एवं किसान हितैषी तकनीकों के बारे में जानकारी दी गई। विद्यार्थियों को कृषि विज्ञान के प्रति जागरूक करने हेतु संवाद साझा कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम के अंत में पोषण सुरक्षा और बागवानी के प्रति रुचि बढ़ाने हेतु 100 विद्यार्थियों के बीच पपीता पौधों का वितरण किया गया।

गाजर घास उन्मूलन जागरुकता कार्यक्रम – दिनांक **16 से 22 अगस्त 2024** तक 19वें गाजरघास जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों, युवाओं एवं आमजन को गाजरघास जैसी हानिकारक खरपतवार के दुष्प्रभावों से अवगत कराना और इसके नियंत्रण के उपायों की जानकारी देना था। किसानों को पार्थेनियम के स्वास्थ्य, पर्यावरण और पशुधन पर पड़ने वाले प्रभावों की जानकारी दी गई, साथ ही जैविक एवं यांत्रिक विधियों द्वारा इसके नियंत्रण के उपाय बताए गए। कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालयों, गाँव एवं कार्यालय के आस पास पार्थेनियम उन्मूलन हेतु सामूहिक श्रमदान भी किया गया। इस अन्तर्गत में कुल 05 कार्यक्रमों का आयोजन कर 182 किसानों/महिलाओं एवं विद्यार्थियों को जागरुक किया गया।

एक पेड़ माँ के नाम अभियान – केन्द्र के द्वारा कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार एवं अटारी पटना के निर्देशानुसार **5 जून से 30 सितम्बर 2024** एक पेड़ माँ के नाम अभियान कार्यक्रम के तहत वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिकों, कर्मचारियों, प्रशिक्षुओं एवं किसानों के द्वारा अपनी माताओं की स्मृति एवं सम्मान में पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। कार्यक्रम का उद्देश्य लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करते हुए वृक्षारोपण को व्यक्तिगत भावनाओं से जोड़ना था। प्रतिभागियों ने संकल्प लिया कि लगाए गए पौधों की देखभाल कर उन्हें वृक्ष का रूप देंगे। कार्यक्रम के अन्तर्गत कुल 35 पौधरोपण किया गया।

09 सितंबर 2024 को कृषि विज्ञान केंद्र, गुमला (विकास भारती, बिशुनपुर) द्वारा संचालित आर्या परियोजना के अंतर्गत ब्लैक बंगाल नस्ल की 35 बकरियाँ (30 मादा एवं 5 नर) केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान (CRIDA), हैदराबाद को शोध कार्य हेतु भेजी गई। यह नस्ल विभिन्न जलवायु परिस्थितियों के लिए उपयुक्त, पालन में आसान, वर्ष में दो बार बच्चों को जन्म देने वाली तथा स्वादिष्ट मांस एवं अधिक बाजार मांग वाली मानी जाती है। इन बकरियों का उपयोग अनुसंधान द्वारा शुष्क क्षेत्र के लिए अधिक अनुकूल नस्ल विकसित करने हेतु किया जाएगा, जिसे निकरा परियोजना के माध्यम से देशभर में प्रसारित किया जाएगा।

कृषक स्वर्ण समद्धि सप्ताह आयोजन – दिनांक **23 से 28 सितम्बर 2024** तक केन्द्र के द्वारा कृषि तकनीकी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस दौरान जिले के विभिन्न गांवों में किसानों को किसान ड्रोन, सूक्ष्म सिंचाई, बीज उत्पादन, पशुपालन, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, प्राकृतिक खेती, उन्नत सब्जी उत्पादन एवं खाद्य प्रसंस्करण जैसी आधुनिक कृषि तकनीकों की जानकारी देकर उन्हें जागरूक किया गया। गाँव में किसानों के साथ तकनीकी साझा कार्यक्रम के अन्तर्गत कृषि विज्ञान रथ के माध्यम से गांव-गांव जाकर किसानों को प्रत्यक्ष रूप से तकनीकी जानकारी दी गई, ताकि वे इन तकनीकों को अपनाकर अपनी आय में वृद्धि कर सकें। इसके अन्तर्गत कुल 06 कार्यक्रमों का आयोजन कर 493 किसानों को लाभान्वित किया गया।

महिला किसान दिवस – दिनांक **15 अक्टूबर 2024** को महिला किसान दिवस के अवसर पर जिला कृषि विभाग गुमला, आत्मा एवं कृषि विज्ञान केन्द्र गुमला के संयुक्त तत्वाधान में कृषक वैज्ञानिक अन्तर मिलन कार्यक्रम सह महिला किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जिला कृषि पदाधिकारी सहित अन्य पदाधिकारी एवं 87 महिला कृषक उपस्थित थे। कार्यक्रम में उपस्थित महिलाओं को सशक्त नारी–सशक्त भारत थीम के अन्तर्गत कृषि क्षेत्र में महिलाओं के योगदान एवं भूमिका के बारे में बताया गया।

राष्ट्रीय पोषण माह – अटारी पटना के निर्देशानुसार **सितम्बर 2024** माह को राष्ट्रीय पोषण माह के रूप में मनाया। जिसके अन्तर्गत केन्द्र के द्वारा विभिन्न गांवों एवं पंचायतों में पोषण रैली, भोजन में विविधता पर प्रशिक्षण, स्थानीय पोषक अनाजों जैसे मोटे अनाज (मिलेट्स) के उपयोग पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए। पोषण वाटिका के माध्यम से ग्रामीण परिवारों को स्वावलंबी बनने और अपने घर के आँगन में ही पोषक तत्वों से भरपूर सब्जियाँ उगाने के लिए प्रेरित किया गया। केन्द्र के द्वारा पोषण माह अन्तर्गत पपीता पौध का वितरण भी किया गया। इसके अन्तर्गत कुल 18 कार्यक्रमों का आयोजन कर 639 किसान बंधु एवं महिलाओं को पोषण सुरक्षा के बारे में जागरुक किया गया।

स्वच्छता ही सेवा – केंद्र के द्वारा **15 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2024** तक स्वच्छता ही सेवा अभियान का आयोजन किया गया। इस अभियान के अंतर्गत केंद्र परिसर के साथ–साथ विभिन्न गाँवों एवं स्कूलों में स्वच्छता जागरूकता रैलियाँ, मैराथन दौड़, सफाई अभियान, निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। अभियान का उद्देश्य ग्रामीण समुदाय को स्वच्छता के महत्व से अवगत कराना और गाँधी जयंती (2 अक्टूबर) के अवसर पर स्वच्छ भारत मिशन को जन–आंदोलन के रूप में सुदृढ़ करना था। इसके अन्तर्गत कुल 16 कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें कुल 1020 प्रतिभागी सम्मिलित हुए।

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा का आयोजन – केन्द्र के द्वारा **14 से 28 सितम्बर 2024** तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया जिसकी शुरुआत 14 सितम्बर को केन्द्र मुख्यालय में हिंदी दिवस समारोह से हुई। इसके अन्तर्गत कुल 09 कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न स्कूलों में प्रतियोगिताएं जैसे निबंध लेखन, प्रश्नोत्तरी, एवं वाद–विवाद का भी आयोजन किया गया, कार्यक्रमों में हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कार्यालयीन कार्यों में इसके अधिक प्रयोग के लिए प्रेरित किया। समारोह का उद्देश्य हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार एवं प्रयोग को बढ़ावा देना था। कार्यक्रम में कुल 610 किसानों एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया।

दिनांक 27 सितंबर 2024 को कृषक स्वर्ण समृद्धि सप्ताह 2024 के अंतर्गत विकास भारती बिशुनपुर के द्वारा गारु में आयोजित किसान मेला में गुमला जिले की 06 लखपति दीदियों को **श्री शिवराज सिंह चौहान, माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री भारत सरकार** के द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन कृषि विज्ञान केंद्र, गुमला (विकास भारती बिशुनपुर) द्वारा किया गया। इस अवसर पर महिलाओं को प्रशस्ति पत्र और ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया, जिन्होंने स्वयं सहायता समूह के माध्यम से जैविक उत्पाद, बीज, खाद्य प्रसंस्करण और उद्यमिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। इन महिला समूहों द्वारा तैयार किए गए उत्पादों की प्रदर्शनी ने सभी का ध्यान आकर्षित किया। कार्यक्रम में महिलाओं की सहभागिता और आत्मनिर्भरता का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए यह संदेश दिया गया कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं नवाचार और उद्यमिता के माध्यम से आत्मनिर्भर बन रही हैं। कार्यक्रम के दौरान **श्री कालीचरण सिंह, मान्नीय सांसद, चतरा** के द्वारा एक पेड़ माँ के नाम अन्तर्गत पौधरोपण भी किया गया।

विशेष स्वच्छता अभियान 4.0 – दिनांक **2 से 30 अक्टूबर 2024** तक जिले के विभिन्न प्रखंण्डों में विशेष स्वच्छता अभियान 4.0 के अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत रैली, गोष्ठी एवं जागरुकता कार्यक्रमों का आयोजन कर ग्रामीणों, युवाओं एवं विद्यार्थियों को स्वच्छ जीवनशैली अपनाने एवं पर्यावरण के प्रति जागरुक किया गया। कुल 16 कार्यक्रमों का आयोजन कर 961 ग्रामीणों, युवाओं एवं विद्यार्थियों को जागरुक किया गया।

प्रधानमंत्री कुसुम योजना (PM-KUSUM) पर किसान जागरूकता कार्यशाला का आयोजन केंद्र के द्वारा प्रधानमंत्री कुसुम योजना के अंतर्गत एक दिवसीय किसान जागरूकता कार्यशाला का आयोजन दिनांक 22 सितम्बर एवं 30 नवम्बर 2024 को किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य किसानों को सौर ऊर्जा आधारित सिंचाई पंपों के लाभ, स्थापना प्रक्रिया, सरकारी अनुदान एवं आवेदन प्रक्रिया की जानकारी देना था। कार्यक्रम के दौरान वैज्ञानिकों द्वारा योजना की विस्तृत जानकारी दी गई तथा किसानों के सवालों का समाधान किया गया। कार्यक्रम में कुल 82 कृषक बंधु एवं महिलाएं उपस्थित थे।

अम्लीय मिट्टी प्रबंधन एवं डोलोमाइट वितरण पर प्रशिक्षण – दिनांक 26.12.2024 से 31.12.2024 तक कृषि विज्ञान केंद्र, गुमला एवं जिला कृषि विभाग, गुमला के सहयोग से जिले के सभी 12 प्रखंडों में अम्लीय मिट्टी प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षणों का उद्देश्य किसानों को मिट्टी की अम्लता के फसल उत्पादन पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक करना और डोलोमाइट के उपयोग के माध्यम से मिट्टी के स्वास्थ्य को सुधारने के तरीकों की जानकारी देना था। प्रशिक्षणोंपरांत 1005 किसानों के बीच 188 टन डोलोमाइट का वितरण जिला कृषि विभाग के द्वारा किया गया, जिससे उन्हें अम्लीय मिट्टी प्रबंधन को व्यवहार में लाने में सहायता मिल सके।

विश्व मृदा दिवस का आयोजन – 7 दिनांक 5 दिसम्बर 2024 को विश्व मृदा दिवस के अवसर पर जिला कृषि विभाग गुमला एवं कृषि विज्ञान केन्द्र गुमला के संयुक्त तत्वाधान में किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया इस अवसर पर उपस्थित किसानों को मृदा परीक्षण, मृदा स्वास्थ्य कार्ड की उपयोगिता, जैविक सुधारकों के प्रयोग एवं संतुलित उर्वरक उपयोग पर जानकारी दी गई। कार्यक्रम में जिले के विभिन्न प्रखंडों से आए 57 किसान भाई एवं महिलाएं उपस्थित थी।

किसान दिवस – दिनांक **23 दिसम्बर 2024** को किसान दिवस के अवसर पर केन्द्र मुख्यालय में किसान संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित 46 किसान बंधुओं को इस अवसर पर किसानों को नवीनतम कृषि तकनीकों, जैविक खेती, जल संरक्षण और सरकारी योजनाओं की जानकारी दी गई।

कृषि चौपाल का सीधा प्रसारण – दिनांक 7.12.24 को डीडी किसान पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम कृषि चौपाल का सीधा प्रसारण किसानों के बीच किया गया। कृषि चौपाल कार्यक्रम का उद्देश्य अनुसंधान, प्रौद्योगिकी और किसानों के बीच की खाई को पाटना है। तथा किसानों को कृषि विशेषज्ञों से जोड़ना, उन्हें सूचना और संसाधन उपलब्ध कराना, तथा ज्ञान और अनुभवों को साझा करने में सुविधा प्रदान करना है। इस अवसर पर जिले के विभिन्न प्रखण्डों से आए कुल 145 किसान बंधु एवं महिलाएं उपस्थित थे।

स्टॉल प्रदर्शन

दिनांक **01-02 जनवरी 2024** को सराईकेला, खरसांवा झारखण्ड में विकसित गांव विकसित भारत के तहत लगने वाले शहीद किसान मेला, कृषि उत्पाद एवं प्रशिक्षण शिविर में केन्द्र के द्वारा स्टॉल लगाकर कृषि तकनीकों का प्रदर्शन किया गया। जिसका अवलोकन **श्री अर्जुन मुण्डा,** माननीय मंत्री कृषि एवं किसान कल्याण कल्याण एवं जनजातीय कार्य मंत्री, भारत सरकार, भा०कृ०अनु०प०-अटारी पटना जोन 4 के निदेशक **डा० अंजनी कुमार** एवं पूर्व महानिदेशक **डा० त्रिलोचन महापात्रा** के द्वारा किया गया।

दिनांक **12 जनवरी 2024** को विश्व युवा दिवस के अवसर पर विकास भारती बिशुनपुर के आरोग्य भवन स्थित रांची कार्यालय में कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा स्टॉल लगाया गया। जिसका अवलोकन झारखण्ड के महामहिम राज्यपाल **श्री सी० पी० राधाकृष्णन** एवं **श्री अर्जुन मुण्डा**, मान्नीय मंत्री कृषि एवं किसान कल्याण कल्याण एवं जनजातिय कार्य मंत्री, भारत सरकार के द्वारा किया गया। केन्द्र के स्टॉल में किसान ड्रोन का भी प्रदर्शन किया गया।

दिनांक **15 जनवरी 2024** को गुमला जिले के बिशुनपुर प्रखण्ड मुख्यालय में लगने वाले पीएम जनमन योजना के तहत होने वाले प्रधानमंत्री जी के अभिभाषण का सीधा प्रसारण एवं किसानों के साथ सीधा संवाद कार्यक्रम में भी केन्द्र के द्वारा स्टॉल लगाकर किसानों को तकनीकी जानकारी दी गई। केन्द्र के स्टॉल का अवलोकन **श्री अर्जुन मुण्डा**, मान्नीय मंत्री कृषि एवं किसान कल्याण एवं जनजातिय कार्य मंत्री, भारत सरकार, **श्री समीर उराँव**, राज्यसभा सांसद, मेयर राँची **श्रीमती आशा लकड़ा** एवं उपायुक्त गुमला, **श्री कर्ण सत्यार्थी** (भा०प्र०से०) के द्वारा किया गया।

दिनांक **03 से 05 फरवरी 2024** तक बिरसा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित एग्रोटेक किसान मेला 2024 में केन्द्र के द्वारा कृषि तकनीकों का स्टॉल लगाकर मेला में आने वाले किसानों को जानकारी दी गई। मेला में गुमला जिले के किसानों को बाह्य भ्रमण कार्यक्रम के अन्तर्गत भ्रमण भी कराया गया। केन्द्र के स्टॉल का अवलोकन किसानों एवं विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों के द्वारा किया गया।

अटारी पटना का 9वां स्थापना दिवस **19 अगस्त 2024** के अवसर पर केन्द्र के द्वारा ICAR-ATARI, जोन-IV, पटना में स्टॉल का प्रदर्शन किया गया। जिसका अवलोकन ICAR के वैज्ञानिकों एवं पदाधिकारियों के द्वारा किया गया।

दिनांक **28 फरवरी 2024** को कृषि विभाग गुमला के द्वारा आयोजित जिला स्तरीय किसान मेला-सह कृषि उत्पाद प्रदर्शनी में केन्द्र के द्वारा कृषि तकनीकी पर स्टॉल लगाया गया।

सम्मान

दिनांक **03 से 05 फरवरी 2024** तक बिरसा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित एग्रोटेक किसान मेला 2023 में केन्द्र के द्वारा उत्कृष्ट स्टॉल प्रदर्शन हेतु द्वितीय पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया एवं जिले के किसान श्री कुलदीप उराँव, ग्राम-चेड़ा, बिशुनपुर को समेकित कृषि प्रणाली हेतु प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

दिनांक **22-23 फरवरी 2024** को भा॰कृ॰अनु॰प॰-अटारी पटना, जोन IV के द्वारा आर्या परियोजना की राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन बोधगया, बिहार में किया गया। उक्त कार्यशाला में युवा उद्यमी श्री मनचन बेक ग्राम-रायडीह, जिला-गुमला को सूकर उत्पादन के क्षेत्र में उद्यमशीलता हेतु सम्मानित किया गया।

दिनांक **29 से 31 अगस्त 2024** को बीएयू सबौर में आयोजित बिहार एवं झारखंड के कृषि विज्ञान केंद्रों की वार्षिक क्षेत्रीय समीक्षा कार्यशाला में ICAR-ATARI, जोन-IV, पटना द्वारा किया कृषि विज्ञान केंद्र, गुमला को आर्या परियोजना अन्तर्गत ग्रामीण युवाओं को कृषि में उद्यमिता के लिए प्रेरित करने और परियोजना के सफल क्रियान्वयन हेतु प्रशंसा प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

दिनांक **27 सितम्बर 2025** को कृषक स्वर्ण समृद्धि सप्ताह 2024 के अंतर्गत विकास भारती बिशुनपुर के द्वारा गारु में आयोजित किसान मेला में गुमला जिले की 06 लखपति दीदियों को **श्री शिवराज सिंह चौहान, मान्नीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री भारत सरकार** के द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया, जिन्होंने स्वयं सहायता समूह के माध्यम से जैविक उत्पाद, बीज, खाद्य प्रसंस्करण और उद्यमिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है।

केन्द्र के द्वारा निर्देशन इकाई पर उत्पादित बीज/ पौध/अन्य उत्पादन

फसल	उत्पादन
बीज उत्पादन	
अनाज फसल	
धान (प्रभेद- MTU-1010)	92.0 q
धान (प्रभेद- स्वर्ण श्रेया)	6.30 q
धान (प्रभेद- काला धान)	1.90 q
मडुआ (प्रभेद- BM-03)	8.60 q
तेलहन	
सरगुजा (प्रभेद - बिरसा नाइजर-3)	1.80 q
तिल (प्रभेद - RT-351)	0.77 q
सरसों (प्रभेद - पी॰ एम॰-30)	0.94 q
दलहन	
अरहर (प्रभेद-बिरसा अरहर-2)	0.50 q
अन्य	
ओल (प्रभेद-गजेन्द्र)	0.20 q
ढैंचा	0.71
कुल बीज उत्पादन	**113.72**
पौध उत्पादन	
पत्तागोभी (प्रभेद-हाइब्रिड लकी)	525

फसल	उत्पादन
फूलगोभी (प्रभेद-गोल्डेन एकर)	450
टमाटर (प्रभेद-सुपर सोनिया, स्वर्ण प्रकाश)	2350
बैंगन (प्रभेद-स्वर्ण श्यामली, RCBR-22)	9650
प्याज (प्रभेद-नासिक रेड)	4200
मिर्च (प्रभेद - स्वर्ण अपूर्वा)	4550
आम (किस्म-लंगड़ा)	1000
पपीता (किस्म - राँची पपीता)	2500
नाशपाती (किस्म - नेतरहाट सेलेक्षन)	1500
नींबू घास किस्म - कृष्णा)	5000
गेंदा (प्रभेद- पूसा नारंगी)	450
कुल पौध उत्पादन	**32175**
सूकर (बच्चा नस्ल-झारसूक)	36
बकरी (बच्चा, नस्ल-ब्लैक बंगाल)	07
मुर्गी (बच्चा, नस्ल, सोनाली, कड़कनाथ)	612
जीवामृत	200 lit
वर्मी कम्पोस्ट	10900 kg
गोट गोल्ड	1000 kg

दलहन एवं तिलहन प्रत्यक्षण प्रभाव

फसल	प्रभेद	उत्पादकता (क्विं/हे०)	किसान उत्पादकता (क्विं/हे०)	वृद्धि (%)
मसूर	IPL-22	12.52	8.15	53.61
अरहर	राजीव लोचन	14.38	10.66	34.89
मूँगफली	के-1812	19.12	14.26	34.17
सरगुजा	बिरसा नाइजर-3	4.70	3.42	37.42
तिल	जी०टी०-6	7.79	5.18	50.38
तीसी	प्रियम	10.20	7.39	38.02
सूर्यमुखी	LFSH-171	12.05	5.50	119.09

केन्द्र की आगामी गतिविधियाँ

आगामी वर्ष 2025 में जनवरी से दिसंबर माह तक केन्द्र के द्वारा आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षण (ग्रामीण युवा युवतियों हेतु रोजगारोन्मुखी एवं वोकेशनल आवासीय प्रशिक्षण)

माह	विषय	अवधि (दिन में)
जनवरी	आम की व्यवसायिक उत्पादन तकनीक	07
	लाह उत्पादन	05
फरवरी	नील हरित शैवाल तथा एजोला निर्माण	05
	सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली लगाने की विधि एवं रख रखाव	05
मई	धान बीज उत्पादन प्रौद्योगिकी	05
	लीची और अमरुद की कटाई एवं छंटाई	07
	केंचुआ खाद का निर्माण	05
	पशु मित्र	07
	मूल्य सवंर्धित उत्पादन	07
	लाह उत्पादन	05
	सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली लगाने की विधि एवं रख रखाव	05
जून	केंचुआ खाद का निर्माण एवं मार्केटिंग	05
	बकरी पालन	07
	लाह उत्पादन	05
	पम्पसेट की मरम्मती एवं रख रखाव	05
	कटिंग एवं टेलरिंग	30
	माली प्रषिक्षण	15
जुलाई	आम की ग्राफ्टिंग तथा लीची, अमरुद एवं नींबू में लेयरिंग	07
	खाद संबंर्धन	05
	मत्स्य पालन	07

माह	विषय	अवधि (दिन में)
अगस्त	सब्जी फसलों में नर्सरी प्रबंधन	07
	पॉल्ट्री फार्मिंग	07
	मधुमक्खी पालन एवं प्रबंधन	05
	सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली लगाने की विधि एवं रख रखाव	05
सितम्बर	सब्जी फसलों में नर्सरी प्रबंधन	07
	पॉल्ट्री फार्मिंग	07
	मधुमक्खी पालन एवं प्रबंधन	05
	सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली लगाने की विधि एवं रख रखाव	05
अक्टूबर	गेंहूँ बीज उत्पादन प्रौद्यौगिकी	05
	वर्मीकम्पोस्ट बनाने की विधि एवं मार्केटिंग	05
	सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली लगाने की विधि एवं रख रखाव	05
नवम्बर	शिमला मिर्च की खेती	05
	गौपालन एवं प्रबंधन	07
	मशरुम उत्पादन	07
	मधुमक्खी पालन एवं प्रबंधन	05
	पम्पसेट मरम्मती एवं रख-रखाव	05
दिसम्बर	वर्मीकम्पोस्ट बनाने की विधि एवं मार्केटिंग	05
	मशरुम उत्पादन	07

नोट - इच्छुक किसान भाई/युवा/युवती उपरोक्त प्रशिक्षण एवं संभावित तिथि की जानकारी हेतु केन्द्र से संपर्क कर सकते हैं।

केन्द्र के द्वारा संचालित परियोजनाएं, उद्देश्य एवं गतिविधियाँ

क्र.	परियोजना का नाम	उद्देश्य	मुख्य गतिविधियाँ
1	अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना तिल एवं रामतिल	परती भूमि में तिलहन फसलों जैसे सरगुजा, तिल खेती को बढ़ावा देना	कुल 16 हे० क्षेत्रफल में 40 किसानों के बीच सरगुजा फसल हेतु विभिन्न तकनीकों का अग्र पंक्ति प्रदर्शन लगाया गया। गाँव-तेतरा, तिल्हईटोली, कोटाम, पोड़ी सरना, सांवरिया
2	जलवायु अनुरुप कृषि पर राष्ट्रीय नवाचार (निकरा)	जलवायु परिवर्तन से होने वाले कुप्रभावों को कम करने हेतु मौसम के अनुरुप खेती को बढावा देना	परियोजना में फेज-3 के अन्तर्गत नए निकरा ग्राम नवाटोली, शिवराजपुर एवं सरनाटोली में 191 किसानों के बीच 73.3 हे० क्षेत्रफल में विभिन्न फसलों पर अग्र पंक्ति प्रदर्शन का आयोजन किया गया एवं 13 प्रशिक्षणों का आयोजक 232 कृषकों को प्रशिक्षित किया गया।
3	आर्या (ARYA-Attracting & Retaining Youths in Agriculture)	कृषि में ग्रामीण युवाओं को आकर्षित करना एवं बनाए रखना	कुल 193 युवाओं को विभिन्न उद्यमों मधुमक्खी पालन, लाह उत्पादन, सूकर पालन एवं बकरी पालन के क्षेत्र में स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षित किया गया। परियोजनान्तर्गत कुल 39 युवा उद्यमी लाह उत्पादन (16), बकरी पालन (12), मधुमक्खी पालन(03) एवं सूकर पालन (08) से जुड़कर आय अर्जित कर रहे हैं।
4	प्राकृतिक खेती	प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण एवं जागरुकता कार्यक्रमों का आयोजन कर किसानों को प्राकृतिक खेती करने हेतु जागरुक करना	इसके अन्तर्गत कुल 22 जागरुकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिसमें कुल 1135 कृषक सम्मिलित हुए। बिशुनपुर एवं घाघरा प्रखण्ड के 4 गांवों में 12 किसानों के खेत पर अग्र पंक्ति प्रदर्शन का आयोजन किया गया।
5	10000 एफपीओ का गठन और संवर्धन	किसान उत्पादक समूहों के माध्यम से उत्पादन करा कर उत्पादों का बाजारीकरण करवाना	इस परियोजनान्तर्गत गुमला एवं रायडीह प्रखण्ड में 01-01 एफ०पी०ओ० का गठन किया गया है, दोनों एफ०पी०ओ० में कुल 1041 किसान सदस्य के रुप में जुड़ चुके हैं। गाँव - मांझाटोली, केराडीह, केराडीह बरटोली, कुलाबीरा, तेलगाँव, रायडीह, पनसो, खोरा, लूटोबरटोली, कुम्हारी, उर्मी, गोलसोसो, साँवरीया, काशीटोली, सिलम, खटखोर, रुकरुम, सुरसांग

कृषि विज्ञान केन्द्र गुमला के द्वारा दी जाने वाली प्रमुख सेवाएं

1.	उत्पादन एवं उत्पादकता वृद्धि हेतु किसान सहभागिता आधारित खेत परीक्षण	9.	मोबाइल आधारित सलाह सेवा
2.	उन्नत कृषि तकनीकी एवं उत्पाद पर अग्र पंक्ति प्रत्यक्षण	10.	मशरूम बीज
3.	कृषि एवं कृषि आधारित रोजगार उन्मुखी आवासीय प्रशिक्षण	11.	केंचुआ खाद
4.	उर्वरक लाइसेंस हेतु आवासीय प्रशिक्षण	12.	एजोला
5.	मौसम का पूर्वानुमान एवं सलाह	13.	उन्नत नस्ल के सूकर, बकरा, बकरी एवं कुक्कुट
6.	मिट्टी एवंजल जाँच	14.	कम भाड़े पर कृषि उपयोगी यंत्र
7.	सहभागिता आधारित बीज उत्पादन	15.	कृषि ड्रोन
8.	गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्री (Planting Materials)		

किसानोपयोगी जानकारियाँ

फसलों का उत्पादन एवं प्रबंधन

फसल - धान

- अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु उन्नत प्रभेद-सहभागी धान, स्वर्णश्रेया, आई॰आर॰-64 (DRT), ललाट, अंजली, सी॰आर॰धान 320 एवं एम॰टी॰यू॰-1010 की खेती करें।
- मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने हेतु हरी खाद (सनई, ढैंचा, चकबड़ की बुवाई करने के बाद 45 दिन की अवस्था में उसी खेत में जोत दें) का प्रयोग करें।
- पानी की कमी की स्थिती में एरोबिक विधि (बिना कादो किए हल के पीछे बुवाई) से धान की खेती करें।
- खड़ी फसल में खरपतवार नियंत्रण हेतु बोआई या रोपाई के 20 दिन बाद बिसपाइरिबैक सोडियम 10 प्रतिशत एस.सी. खरपतवारनाशी का उपयोग करें।

फसल - मक्का

- मक्का के प्रभेद पूसा एच॰एम॰-9, गंगा-5 की खेती करें। प्रति एकड़ 8 किलो बीज का प्रयोग करें। उचित दूरी लाइन से लाइन 60 सेमी एवं पौध से पौध 25 सेमी पर लगाएं।
- प्रति एकड़ 84 किलो यूरिया, 52 किलो डीएपी तथा 27 किलो एमओपी उर्वरक का प्रयोग करें।
- कुपोषण दूर करने हेतु प्रोटीन युक्त मक्का एच॰क्यू॰पी॰एम॰-1 एवं 7 की खेती।
- खरपतवार नियंत्रण हेतु बुवाई के बाद एवं अंकुरण से पहले एट्राजिन एवं अंकुरण के 15 दिन बाद लाउडिस खरपतवारनाशी का छिड़काव करें।
- कीट नियंत्रण हेतु क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 18.5% कीटनाशी का उपयोग करें।

फसल - मडुआ

- ए-404, बिरसा मडुआ-2 एवं जीपीयू 28 प्रभेद का प्रयोग करें।
- अधिक उपज प्राप्त करने हेतु गोबर खाद के साथ यूरिया, डीएपी एवं पोटाश उर्वरक का प्रयोग करें।
- सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होने पर वर्षा न होने की स्थिति में सिंचाई जरुर करें।
- मडुआ की खड़ी फसल में खरपतवार नियंत्रण हेतु बिसपाइरिबैक सोडियम 10% SC खरपतवारनाशी का रोपाई के 20 दिन बाद उपयोग करें।

फसल - उरद

- पंत यू-19, 30 एवं 31, उत्तरा, पंतयू-19, बिरसा उरद-1 प्रभेदों की बुवाई करें। प्रति एकड़ 10 किलो बीज का प्रयोग करें।
- बीज को राइजोबियम कल्चर से उपचारित कर लगावें।
- अधिक उपज प्राप्त करने हेतु डीएपी एवं एमओपी उर्वरक का प्रयोग बुवाई के समय करें।
- खरपतवार नियंत्रण हेतु बोआई के 3 दिन के अंदर आक्सीगोल्ड या पेन्डीमेथलीन खरपतवारनाशी का उपयोग करें। खड़ी फसल में इमेजेथापायर 10% SL खरपतवारनाशी अंकुरण के 20 दिन बाद उपयोग करें।
- भुआ पिल्लू के नियंत्रण हेतु इमामेक्टीन बेंजोएट, डेल्टामेथ्रीन या साइपरमेथ्रीन कीटनाशी का प्रयोग करें।

फसल - अरहर

- प्रभेद मालवीय-13, आशा, नरेन्द्र अरहर-1, राजीव लोचन, आई॰पी॰ए॰ 2-3 एवं बिरसा अरहर-2 की खेती करें।
- अगती प्रभेदों (140 दिन) का प्रति हे॰ 30-35 क्रिग्रा बीज प्रयोग करें तथा 45 x 10 सेमी की दूरी पर लगाएं।
- मध्यम अवधि (180-210 दिन) का प्रति हे॰ 20 क्रिग्रा बीज प्रयोग करें तथा 60 x 20 सेमी की दूरी पर लगाएं।
- अरहर की फसल में भी उरद की तरह खरपतवारनाशी का उपयोग करें।

फसल - मूँगफली

- टीजी-22, टीजी-51, के॰-6, ए॰के॰ 12-24 प्रभेदों की खेती करें।
- बीज को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करके लगावें।
- अच्छी उपज प्राप्त करने हेतु गोबर खाद के साथ डीएपी, एमओपी तथा फास्फोजिप्सम उर्वरक का प्रयोग करें।
- मूँगफली की फसल में भी उरद की तरह खरपतवारनाशी का उपयोग करें।
- **तिल** - कांके सफेद, गुजरात तिल 1 एवं 2 की खेती करें, प्रति एकड़ 2-2.5 किलो बीज का प्रयोग करें।

सरगुजा

- अधिक उपज प्राप्त करने के लिए बिरसा नाइजर 1, 2, 3 की खेती करें। प्रति हेक्टेयर 5-6 किलो बीज का उपयोग करें।
- 15-30 अगस्त तक बोआई जरूर करें।

अन्य सुझाव

- प्रधानमंत्री फसल बीमा के अन्तर्गत फसल बीमा जरुर कराएं।
- वर्षा जल के संचयन हेतु डोभा एवं तालाब का निर्माण करें।
- खेत में पानी रोकने हेतु मेढ़बंदी करें।
- कम पानी एवं कम अवधि वाले फसलों की खेती को बढ़ावा दें।
- मोटे अनाजों (श्री अन्न) फसलों की खेती को अपनाएं।
- मेढ़ एवं तालाब पर चारा फसल नेपियर घास लगावें।
- अन्तवर्ती खेती को बढ़ावा दें।
- पशुओं का टिकाकरण कराएं।
- पशुओं के चारा हेतु हाइब्रिड नेपियर, ज्वार, बाजरा, राइसबीन एवं मक्का लगावें।
- खेती में समय की बचत हेतु यंत्रों का प्रयोग करें।

खरीफ फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य

क्र.	फसलें	2021-22	2022-23	2023-24	2024-25	2023-24 से MSP कितनी बढ़ी
1	धान (सामान्य)	1940	2040	2183	2300	117
2	धान (ग्रेड ए)	1960	2060	2203	2320	117
3	ज्वार (हाइब्रीड)	2738	2970	3180	3371	191
4	बाजरा	2250	2350	2500	2625	125
5	मडुआ	3377	3678	3846	4290	444
6	मक्का	1870	1962	2090	2225	135
7	अरहर	6300	6600	7000	7550	550
8	मूँग	7275	7755	8558	8682	124
9	उरद	6300	6600	6950	7400	450
10	मूँगफली	5550	5850	6377	6783	406
11	सूर्यमुखी बीज	6015	6400	6760	7280	520
12	तिल	7307	7830	8635	9267	632
13	सरगुजा बीज	6930	7287	7734	8717	983

कृषि विज्ञान केन्द्र, गुमला में कृषि उपकरण बैंक अन्तर्गत किसानों के लिए किराए पर उपलब्ध उपकरण एवं दर

क्र.सं.	उपकरण	दर
1.	धान थ्रेसर	400 रू./घंटा
2.	जीरो टिलेज मशीन	100 रू./घंटा
3.	रीपर (धान)	100 रू./घंटा
4.	गेंहूँ थ्रेसर	400 रू./घंटा
5.	ट्रैक्टर	800 रू./घंटा
6.	किसान ड्रोन	700 रू./घंटा

संरक्षक - **पद्मश्री अशोक भगत**, मुख्य संपादक - **डॉ. संजय कुमार**

संकलन - **अटल बिहारी तिवारी, श्वेता विश्वकर्मा एवं मृत्युंजय कुमार सिंह**

सहयोग - **सुनील कुमार, डॉ. नीरज कुमार वैश्य, डॉ. निशा तिवारी, ई. एनो राई, डॉ. विनोद कुमार, राजीव कुमार सिंह एवं रतन उराँव**

वेबसाईट - **gumla.kvk4.in**

KVK/G/2025-26/VOL-18 (1-300)

Design & Print : Maana Flex Gumla 6203781827